नीतिवचन 10:1 को समझना “बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को
आनंदित करता है”

प्रश्न:

मैं नीतिवचन 10:1 का वास्तविक और गहरा अर्थ समझना चाहता/चाहती हूँ।

नीतिवचन 10:1
“बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनंदित करता है, परन्तु
मूर्ख पुत्र अपनी माता को शोकित करता है।”
(पवित्र बाइबल, हिंदी—संशोधित संस्करण)

उत्तर:

बाइबल में “बुद्धिमान” और “मूर्ख” शब्द केवल समझ या बुद्धि की क्षमता से संबंधित नहीं हैं, बल्कि उनका सीधा संबंध मनुष्य के परमेश्वर के साथ संबंध से है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि सच्ची बुद्धि की शुरुआत यहोवा के भय से होती है (नीतिवचन 9:10)। बुद्धिमान वही है जो परमेश्वर को स्वीकार करता है, उसके वचन का पालन करता है और उसकी आत्मा के अनुसार जीवन बिताता है। इसके विपरीत, मूर्ख वह है जो परमेश्वर के अधिकार को ठुकराता है और अपनी इच्छा के अनुसार चलता है, जिसका परिणाम पापपूर्ण जीवन में दिखाई देता है।

भजन संहिता 14:1 कहती है:
“मूर्ख ने अपने मन में कहा है, ‘कोई परमेश्वर नहीं।’”

ऐसी मूर्खता अनेक रूपों में प्रकट होती है—जैसे चोरी, घमंड, आलस्य, टोना-टोटका, क्रोध, मतवालापन, झूठ, लोभ और स्वार्थ (गलातियों 5:19–21)। मूर्खता की जड़ वह हृदय है जो परमेश्वर से दूर है और जिसे उसके भय का ज्ञान नहीं (यिर्मयाह 17:9)।

जब नीतिवचन 10:1 कहता है कि बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनंदित करता है, तो यह केवल मानवीय खुशी की बात नहीं करता। यह उस गहरे आत्मिक आनंद की ओर संकेत करता है जो तब होता है जब कोई संतान धार्मिकता में चलती है और परमेश्वर के नाम की महिमा करती है। ऐसा जीवन परमेश्वर को भी प्रसन्न करता है, क्योंकि वह अपने उन लोगों से आनंदित होता है जो उसका भय मानते हैं (भजन संहिता 147:11)।

इसके विपरीत, मूर्ख पुत्र अपनी माता को शोकित करता है। यह उस गहरे दर्द और पीड़ा को दर्शाता है जो परिवार में पापपूर्ण जीवन के कारण उत्पन्न होती है। यह शोक केवल माता तक सीमित नहीं रहता; पिता भी इसे उतनी ही गहराई से अनुभव करता है, जैसा कि नीतिवचन 17:25 में लिखा है:

“मूर्ख पुत्र अपने पिता को शोकित करता है, और जो उसे जन्म देने

वाली है उसे कड़वाहट देता है।”

पिता के आनंद और माता के शोक पर दिया गया अलग-अलग ज़ोर पारिवारिक वास्तविकताओं को भी दर्शाता है। अक्सर पिता संतान के चरित्र और सही मार्ग पर चलने में गर्व अनुभव करता है, जबकि माता पालन-पोषण और भावनात्मक जुड़ाव के कारण संतान के भटकने का दर्द अधिक गहराई से महसूस करती है।

आत्मिक रूप से यह चित्र परमेश्वर पिता और उसकी प्रजा के संबंध को भी प्रकट करता है। कलीसिया को परमेश्वर की दुल्हन कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 21:2), और विश्वासियों को उसकी संतान (यूहन्ना 1:12)। जब हम बुद्धिमानी से—परमेश्वर से प्रेम रखते हुए और उसके वचन के अनुसार—जीवन जीते हैं, तो हम उसकी महिमा करते हैं (इफिसियों 1:6)। परन्तु मूर्खतापूर्ण जीवन न केवल व्यक्ति को हानि पहुँचाता है, बल्कि पूरे आत्मिक परिवार में दुःख और अशांति भी लाता है (गलातियों 5:22–23 की तुलना 5:19–21 से करें)।

इसका व्यावहारिक प्रभाव कलीसिया में भी दिखाई देता है। फूट, प्रेम की कमी और स्वार्थ—जो मूर्खता के फल हैं—कलीसिया के शरीर से आनंद और शांति छीन लेते हैं (1 कुरिन्थियों 1:10; कुलुस्सियों 3:14–15)।

प्रार्थना है कि प्रभु हमें अपनी बुद्धि और प्रेम में चलना सिखाए , ताकि हम अपने स्वर्गीय पिता को आनंदित करें और उसके परिवार में शांति के कारण बनें।

शालोम।

Share on:
WhatsApp

Print this post